"सीहङ्गुली सीहनखो, सीहपादपतिट्ठितो। सो सीहो सीहसङ्घम्हि, एको नदति अञ्ञथा"ति ।।

तत्थ सीहपादपतिट्ठितोति सीहपादेहेव पतिट्ठितो। एको नदति अञ्ञथाति एकोव अवसेससीहेहि असदिसेन सिङ्गालसद्देन नदन्तो अञ्ञथा नदति।

तं सुत्वा बोधिसत्तो "तात, एस तव भाता सिङ्गालिया पुत्तो, रूपेन मया सदिसो, सद्देन मातरा सदिसो"ति वत्वा सिङ्गालिपुत्तं आमन्तेत्वा "तात, त्वं इतो पट्ठाय इध वसन्तो अप्पसद्दो वस, सचे पुन नदिस्ससि, सिङ्गालभावं ते जानिस्सन्ती"ति ओवदन्तो दुतियं गाथमाह—

"मा त्वं नदि राजपुत्त, अप्पसद्दो वने वस। सरेन खो तं जानेय्युं, न हि ते पेत्तिको सरो"ति ।।

तत्थ राजपुत्तातति सीहस्स मिगरञ्ञो पुत्त। इमञ्च पन ओवादं सुत्वा पुन सो नदितुं नाम न उस्सहि।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि—"तदा सिङ्गालो कोकालिको अहोसि, सजातिपुत्तो राहुलो, मिगराजा पन अहमेव अहोसि"न्ति।

सीहकोत्थुजातकं

९. सीहचम्मजातकं

नेतं सीहस्स नदितन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो कोकालिकञ्ञेव आरब्भ कथेसि।

सिंह की सी अँगुलिया, सिंह के समान नाखून और सिंह के ही सदृश पैरों वाला वह सिंह, सिंहों के समूह में अन्य प्रकार का स्वर करता है।

सीहपादपतिट्ठितोति–सिंह के पैरों ही पर प्रतिष्ठित। एको नदति अञ्ञथाति–अकेला दूसरे सिंहों से भिन्न शृगाल-स्वर से बोलता हुआ अन्यथा बोलता है।

इसे सुन बोधिसत्त्व ने कहा–"तात तेरा भाई शृगाली का पुत्र है। इसका रूप मेरे समान है, शब्द (स्वर) माता-जैसा।" फिर शृगाल पुत्र को बुला कर कहा–"तात! अब से तुम जब तक यहाँ रहो अधिक मत बोलना। यदि फिर ऊँचे स्वर में बोलेगा, तो तुम्हारा शृगाल होना जान लेंगे।" इस प्रकार उपदेश देते हुए दूसरी गाथा कही–

राजपुत्र ! तुम ऊँचे स्वर से मत बोलो। धीरे बोलते हुए बन में रहो। तुम्हारे स्वर से जान लेंगे, (कि तुम शृगाल हो) क्योंकि तुम्हारा स्वर पिता का स्वर नहीं।

राजपुत्र, मृगराज सिंह का पुत्र। इस उपदेश को सुनकर उसने फिर उच्च स्वर में बोलने का साहस नहीं किया।

शास्ता ने यह धर्मदेशना कह जातक का परिणाम संघटित किया। उस समय शृगाल कोकालिक था। स्वजातीय पुत्र राहुल। मृगराज तो मैं ही था।

सीहकोत्थुक जातक

१८९. सीहचम्म जातक

"नेतं सीहस्स नदितंति–....." यह (गाथा) भी शास्ता ने जेतवन में विहार करते समय कोकालिक (भिक्षु) के सम्बन्ध में कही।

पच्चुप्पन्नवत्थु

सो इमस्मिं काले सरभञ्ञं भणितुकामो अहोसि। सत्था तं पवत्तिं सुत्वा अतीतं आहरि।

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्तो बोधिसत्तो कस्सककुले निब्बत्तित्वा वयप्पत्तो कसिकम्मेन जीविकं कप्पेसि। तस्मिं काले एको वाणिजो गद्रभभारकेन वोहारं करोन्तो विचरति। सो गतगतट्ठाने गद्रभस्स पिट्ठितो भण्डिकं ओतारेत्वा गद्रभं सीहचम्मेन पारुपित्वा सालियवखेत्तेसु विस्सज्जेति। खेत्तरक्खका तं दिस्वा "सीहो"ति सञ्ञाय उपसङ्कमितुं न सक्कोन्ति। अथेकदिवसं सो वाणिजो एकस्मिं गामद्वारे निवासं गहेत्वा पातरासं पचापेन्तो ततो गद्रभं सीहचम्मं पारुपित्वा यवखेत्ते विस्सज्जेसि। खेत्तरक्खका "सीहो"ति सञ्ञाय तं उपसङ्कमितुं असक्कोन्ता गेहं गन्त्वा आरोचेसुं। सकलगामवासिनो आवुधानि गहेत्वा सङ्खे धमेन्ता भेरियो वादेन्ता खेत्तसमीपं गन्त्वा उन्नदिंसु, गद्रभो मरणभयभीतो गद्रभरवं रवि। अथस्स गद्रभभावं ञत्वा बोधिसत्तो पठमं गाथमाह—

"नेतं सीहस्स नदितं, न ब्यग्घस्स न दीपिनो। पारुतो सीहचम्मेन, जम्मो नदति गद्रभो"ति ।।

तत्थ **जम्मोति** लामको। गामवासिनोपि तस्स गद्रभभावं ञत्वा तं अट्ठीनि भञ्जन्ता पोथेत्वा सीहचम्मं आदाय अगमंसु।

अथ सो वाणिजो आगन्त्वा तं ब्यसनभावप्पत्तं गद्रभं दिस्वा दुतियं गाथमाह—

क. वर्तमान कथा

वह (भिक्षु) उस समय स्वर से सूत्र पाठ करना चाहता था। शास्ता ने वह समाचार सुन पूर्व जन्म की कथा कही–

ख. अतीत कथा

पूर्व समय में वाराणसी-नृप ब्रह्मदत्त के राज्य करते समय बोधिसत्त्व कृषक कुल में पैदा हो बड़े होने पर खेती करके जीविका चलाते थे। उस समय एक बनिया गधे पर बोझा लाद कर व्यापार करता हुआ घूमता था। वह जहाँ-जहाँ जाता वहाँ-वहाँ गधे की पीठ पर से सामान उतार, गधे को सिंह की खाल पहना, धान तथा जौ के खेत में छोड़ देता। खेत की रखवाली करने वाले उसे देख, शेर समझ, पास न जा सकते थे। एक दिन उस बनिये ने एक ग्राम-द्वार पर ठहर प्रातःकाल का भोजन पकाते समय गधे को सिंह की खाल पहना जौ के खेत में छोड़ दिया। खेत की रखवाली करनेवालों ने उसे शेर समझ पास न जा सकने के कारण घर जाकर समाचार दिया। समस्त ग्रामवासी आयुध ले, शंख-नाद करते तथा ढोल बजाते हुए खेत के समीप पहुँच चिल्लाने लगे। गधे ने मृत्युभय से डर गधे का स्वर किया वह गधा है जान बोधिसत्त्व ने पहली गाथा कही–

न यह शेर का स्वर है, न व्याघ्र का, न चीते का, शेर का चर्म पहनकर दुष्ट गधा चिल्ला रहा है।
जम्मो, नीच।

ग्रामवासियों नेभीयह जान कि वह गधा है, उसकी हड्डियाँ तोड़ते हुए उसे पीटा और सिंह का चर्म लेकर चले गये। उस बनिये ने आकर जब विपत्ति में पड़े उस गधे को देखा तो दूसरी गाथा कही–

"चिरम्पि खो तं खादेय्य, गद्रभो हरितं यवं। पारुतो सीहचम्मेन, रवमानोव दूसयी"ति।।

तत्थ तन्ति निपातमत्तं, अयं गद्रभो अत्तनो गद्रभभावं आजानापेत्वा सीहचम्मेन पारुतो चिरम्पि कालं हरितं यवं खादेय्याति अत्थो। **रवमानोव दूसयीति** अत्तनो पन गद्रभरवं रवमानोवेस अत्तानं दूसयि, नत्थेत्थ सीहचम्मस्स दोसोति। तस्मिं एवं कथेन्तेयेव गद्रभो तत्थेव निपन्नो मरि, वाणिजोपि तं पहाय पक्कामि।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि—"तदा वाणिजो देवदत्तो अहोसि, गद्रभो कोकालिको, पण्डितकस्सको पन अहमेव अहोसि"न्ति।

सीहचम्मजातकं

●

१०. सीलानिसंसजातकं

पस्स सद्धाय सीलस्साति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं सद्धं उपासकं आरब्भ कथेसि।

पच्चुप्पन्नवत्थु

सो किर सद्धो पसन्नो परियसावको एकदिवसं जेतवनं गच्छन्तो सायं अचिरवतिनदीतीरं गन्त्वा नाविके नावं तीरे ठपेत्वा धम्मस्सवनत्थाय गते तित्थे नावं अदिस्वा बुद्धारम्मणं पीतिं गहेत्वा नदिं ओतरि, पादा उदकम्हि न ओसीदिंसु। सो पथवीतले गच्छन्तो विय वेमज्झं गतकाले वीचिं पस्सि। अथस्स बुद्धारम्मणा पीति मन्दा जाता,

---

सिंह का चर्म पहनकर तुम चिरकाल तक हरे जौ खाते रहे। हे गधे तुम बोल कर ही स्वयं को कष्ट दिया।

तं निपात मात्र है। यह **गद्रभो** (गर्दभी) अपने गधेपन को छिपा **सीहचम्मेन पारुतो चिरम्पि** देर तक **हरितं यवं खादेय्य** हरे-हरे जौ खाते रह अपने गधे का स्वर करके ही अपने को विपत्ति में डाला। इसमें सिंह-चर्म का दोष नहीं।

उसके ऐसा कहते ही गधा वहीं गिर कर मर गया। बनिया भी उसे छोड़कर चला गया।

शास्ता ने यह धर्मदेशना कह जातक का परिणाम संघटित किया। उस समय गधा कोकालिक था। पण्डित कृषक तो मैं ही था।

सीहचम्म जातक

●

१९०. सीलानिसंस जातक

"पस्स सद्धाय सीलस्स-....." यह (गाथा) शास्ता ने जेतवन में विहार करते समय एक श्रद्धवान् उपासक को लक्ष्य करके कही।

क. वर्तमान कथा

वह श्रद्धवान् प्रसन्नचित आर्य-श्रावक था। एक दिन जेतवन जाते समय उसने सायंकाल अचिरवती नदी के किनारे जाकर देखा कि नाविक, नौकाओं को किनारे पर छोड़ धर्म सुनने के लिए चले गये। वह घाट पर नौका न देख, बुद्ध का स्मरण कर मन को प्रसन्न कर नदी में उतर पड़ा। पाँव पानी में नहीं भीगे। पृथ्वी तल पर चलते हुए के समान बीच में पहुँचने पर उसने लहर को देखा। उसकी बुद्ध-भक्ति मन्द पड़ गयी थी; इससे उसके पैर डूबने लगे। उसने बुद्ध-भक्ति को दृढ़ कर